BA. I. Paper - 2
Topic - Pressure groups (दबाव समूह)
Date -
Seema Kumari, Asst. Prof. (Political Science), RMC, VKSU

प्रेशर ग्रुप (दबाव समूह) - उदार लोकतंत्र का ध्येय परस्पर विरोधी हितों में सामंजस्य स्थापित करना है। इस व्यवस्था के अंतर्गत सभी नागरिकों को विचार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के साथ-साथ संगठन बनाने और सभा करने की भी स्वतंत्रता प्राप्त होती है। विभिन्न समूह अपनी अपनी अभिरुचि के विषय से जुड़ी गतिविधियों में भाग लेने के लिए जो संगठन बनाते हैं उन्हें साधारणतः सहचर्य (Association) की संज्ञा देते हैं। सहचर्यों का विचारक्षेत्र बहुत व्यापक हो सकता है। इसमें व्यवसायिक संघ से लेकर अध्ययनमंडल और मनोरंजन क्लब तक आ सकते हैं। सामाजिक जीवन में इनका बहुत महत्व होता है। फिर, जब कोई सहचर्य अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए राजनीतिक प्रक्रिया को प्रभावित करने का प्रयोग करते हैं तो उन्हें हम हित समूह कहते हैं। जब कोई हित समूह अत्यधिक सक्रिय हो जाता है और अन्य समूहों के हितों को पीछे धकेल देता है एवं अपने हितों की सिद्धि के लिए सरकार पर अपना दबाव बढ़ा देता है तो उसे दबाव समूह (Pressure groups) की संज्ञा दी जाती है। अत्यधिक प्रभावशाली दबाव समूह को 'लाबी' कहा जाता है।

विकसित देशों में दबाव समूह की परंपरा अत्यधिक प्रचलित है। पश्चिमी देशों की राजनीति में ये समूह महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आर्थर बेंटली ने अपनी चर्चित किताब 'The Process of government' (1908) के अंतर्गत हित समूहों का पहला व्यवस्थित अध्ययन प्रस्तुत किया था। राजनीतिक रूप से दबाव समूह को ऐसा हित समूह मान सकते हैं जो साधारणतः अपने सदस्यों के किन्हीं संकीर्ण हित की रक्षा के लिए सरकार पर दबाव डालने का प्रयत्न करता है। इसके लिए वह जनसंपर्क, विज्ञापन और प्रचार की विस्तृत

Scanned with CamScanner

सहायता ले सकता है। किसी दबाव समूह की शक्ति या क्षमता अनेक गतिविधियों पर निर्भर है जैसे कि उसकी सदस्य संख्या कितनी है? इस समूह में कितने प्रतिशत सदस्य सक्रिय है? उसका नेतृत्व कितना उत्कृष्ट है? उसके पास कितनी निधि है? और सबसे बढ़कर उसे अपनी दिलचस्पी के विषयों की कितनी अच्छी जानकारी है?

आधुनिक लोकतंत्र में दबाव समूहों की भूमिका को यथोचित मान्यता दी जाती है यहां तक कि विधायी समितियां और सरकारी विभाग विशेष हितों से संबंधित नीतियां और कानून बनाते समय उपयुक्त द. स. से जानकारी और राय मांगती है। लोकतंत्र की सार्थकता के लिए यह जरूरी है कि समाज में सभी प्रकार के हितों का प्रतिनिधित्व करने वाले दबाव समूह यथेष्ट रूप से सक्रिय हों।

दबाव समूह सार्वजनिक नीति को प्रभावित करने के लिए निम्न उपाय अपनाते हैं:-

1. व्यवसायिक हित समूह अपने व्यवसाय के संबंध में सरकार, विधायी समितियों और नीति निर्माताओं के पास आधार सामग्री और सुझाव भेजते हैं जिनमें उनकी मांगे छिपी रहती है।
2. वे पत्र पत्रिकाओं, रेडियो और टेलीविजन पर विज्ञापन देकर जनमत को अपने अनुकूल बनाने की कोशिश करते हैं।
3. अपनी दिलचस्पी के विषयों पर दबाव समूह समाचार पत्र सम्मेलन (Press conference), वाद विवाद, विचार गोष्ठियां वार्ताएं और भाषणमालाएं आयोजित करके उनके प्रति जनसाधारण के मन में रुचि पैदा करने की प्रयत्न करता है।
4. कभी-कभी दीवारों पर पोस्टर लगवाकर तथा जुलूस, रैलियां, प्रदर्शन, हड़ताल इत्यादि आयोजित कर जनता और अधिकारियों का ध्यान खींचती है।
5. कुछ दबावसमूह अपने कार्यकर्ताओं और अधिवक्ताओं के के माध्यम से विधानमंडल के सभाकक्षों, और लॉबीज की ओर सदस्यों को प्रभावित करते हैं जिसे लाबिंग की संज्ञा दी जाती है।

Scanned with CamScanner

6. ऐसे उम्मीदवारों को चुनाव में वित्तीय सहायता दे सकते हैं जो उसके साथ उद्देश्य के साथ सहानुभूति रखते हैं और आगे चलकर उसकी पुष्टि में सहायक हो सकते हैं।
7. कभी-कभी कुछ प्रेशर ग्रुप्स अपने स्वार्थों की सिद्धि के लिए संबद्ध अधिकारियों को रिश्वत देकर अनैतिक तरीकों से उनका फेवर प्राप्त करने की कोशिश करते हैं

Scanned with CamScanner